आकर्षक अभियान

महिसरहो पंचायत का मूख्यालय है। अति सघन बस्ती है। यहाँ तेली, कलवार, पण्डित, सादा, मुखिया, साह, वनिया, नाई, डोम जाति के लोग रहते है। महिसरहो तक पक्की सड़क जाती है। इस गाँव की आबादी 6000 लगभग है। सभी जातियों में अच्छा सम्बधं है। महिसरो में 1 उच्च वि0 तथा 1 मध्य वि0 हैं। 3 कि0 मी0 की दूरी पर महावि0 भी है। बगल में महावि0 होने के कारण 11वीं की शिक्षा प्राप्त करने में परेशानी नहीं होती है। महिसरहो से लगभग 1/2 कि0 मी0 पश्चिम कोशी तटबंध है। प्रखंड मूख्यालय से 5 किमी0 उत्तर में गांव स्थित है तथा जिला से 18 कि0मी0 की दूरी पर स्थित हैं जिला और प्रखंड दोनों मुख्यालय से यह गावं पक्की सड़क से जूड़ा है। ग्रामीणों की पेशा कृषि, मजदूरी, दूकानदारी कुम्भकारी मकई, मुंग, धान, गेहूँ सुर्यमुखी तथा गरमा की खेती होती है। यहाँ अच्छे–अच्छे कृषक भी है। कुछ लोगों की जमीन तटबंध के अंदर है जहां रहकर खेती करते है।

महिसरहो के लोगों का पेयजल का श्रेात पहले कुंआ था अभी भी कही–कहीं कुंआ मौजूद है। लेकिन उसका पानी लोग नहीं पीते है। वर्तमान में लोग चापाकल का पानी ही पीने के काम में लाते हैं। यहां के चापाकल में आईरन की मात्रा अत्यधिक है।

मेघ पाईन अभियान कोशी सेवा सदन महिषी का यह 2007 से ही कार्यक्षेत्र रहा है। अभियान के तरफ से सार्वजनिक स्तर पर मटका फिल्टर दिया गया। यहां आंगनवाड़ी केन्द्र में मटका फिल्टर लगाये गये। साथ ही सामूहिक स्तर पर वर्षा जल संगहण स्टॉल लगाया गया। 2007में लोग वर्षा जल पीने से कतराते लोगों को इस जल को पीने के लिए कार्यकर्त्ता खुद पीकर दिखाते। इस तरह से कार्यकर्ता ने लोगों को प्रेरित किया। लोगों ने दोनों का पानी पीया मेघ पाईन अभियान के प्रति विश्वास जगी।

आनंदी चौधरी ग्राम महिसरहो उम्र 60 वर्ष के हैं वे खुद स्थायी फिल्टर लगाए है तथा बगल में ही मेघ पाईन अभियान के सौजन्य से लगा वर्षा जल संग्रहण स्टॉल से बराबर वर्षा जल लाकर पीते है। उनकी पत्नी मीना देवी गैस्टिक से परेशान रहती थी। इलाज उन्होंने पटना में भी करवाया मीना देवी को डा0 ने लेनसोफाजोल नामक गोली प्रतिदिन खाने के लिए बताया। यह यत्न पूर्वक प्रतिदिन वर्षाजल कोठी से लाकर पीती है। वर्षा जल के लगातार सेवन से उसकी बीमारी ठीक है। अब वह गोली नहीं खाती हैं वर्षा जल नियमित

सेवन करती है। अब वह स्वस्थ्य है। लोगों को रोग मुक्ति के लिए वर्षा जल सेवन हेतु प्रेरित करती है। यह अभियान की सफलता है।

आनंदी चौधरी का कहना है कि मैं भी जब घर पर रहता हूँ तो जल कोठी से वर्षा जल लाकर पीता हूँ। मेघ पाईन अभियान से उन्होंने अनुदानित दर पर स्थायी फिल्टर खरीदा है। उनका मानना है कि चापाकल के पानी की तूलना में फिल्टर का पानी आयरण मुक्त होता है। सबसे अच्छा वर्षा का पानी होता है।

इनकी स्थायी फिल्टर से प्राप्त पानी में बदवू आता था लेकिन एक लोहे की पाईप इन्होंने अपने फिल्टर में लगाया इससे फिल्टर के पानी का बदबू खत्म हो गया। 8–10 दिन पर निश्चत रूप से 4 फिल्टर की सफाई करते हैं। अषुध पानी के कारण ही 75 प्रतिशत बीमारी होती है पानी के प्रति पूर्ण सावधान रहते है। चौधरीजी शुद्ध पानी के प्रति इतने संवेदनशील है कि ग्राम प्रधान से सम्पर्क कर शुद्ध पेयजल आपूर्ति करवाने के लिए कहा। ये अपने बच्चे के मार्फत दिल्ली से फिल्टर मंगवाना चाहते थे। तब तक मेघ पाईन अभियान का फिल्टर बन गया। कार्यकर्ता से सम्पर्क होने बाद कार्यकर्त्ता ने मेघ पाईन अभियान के शोच से निर्मित फिल्टर खरीदने के लिए कहा और वे खरीदे।

महिसरहो पंचायत मेघ पाईन अभियान का कार्यक्षेत्र है। यहाँ के लोगों में यह भ्रम था कि वर्षाजल पीने से घेंधा रोग होता है। इस स्थिति में मेघ पाईन अभियान के द्वारा यहाँ गांव का आर्थिक, सामाजिक, स्थिति का सर्वेक्षण हुआ। महत्वपूर्ण जल श्रोतों का चयन किया गया। अमरूद के पत्ते से पानी में आइरन की जांच कर लोगों में अभियान के प्रति जागरूक करने का प्रयास हुआ। इतना ही नहीं कठपुतली के माध्यम से शुद्ध पेयजल, स्वच्छता सम्बंधी जानकारी दी गई।

महिसरहो में 2007 में वर्षाजल संग्रहण हेतु स्टाल लगाया गया तब लोगों को वर्षा जल पीने में भय बना रहता था कार्यकर्त्ता वर्षा जल पीकर वहां के लोगों को दिखाता धीरे–धीरे वर्षा जल के प्रति विश्वास जगने लगा। सेड से 100 मी0 की दूरी पर पुनिता देवी पति रधुनंदन चौधरी उम्र 50 वर्ष का घर था। इनके प्रति बाहर रहते थे। वे उस वर्ष भी वर्षा पानी सेड से लाकर कम मात्रा में पीया लेकिन यत्नपूर्वक नहीं पिया।

इनका नैहर दरभंगा जिला के हाटी उचटी में है। वहां वह स्वस्थ रहती थी जबसे महिसरहो आई तब से बीमार रहने लगी। नैहर के पानी में आइरन नहीं था। महिसरहो आने के बाद वह पिछले 20 वर्ष से बीमार रहती थी जो कुछ खाती पचता नहीं था। गैस्टिक से परेशान रहती थी। हवा नहीं छूटता था बेहोश होकर गिर जाती। लोग कहते अब तुम नहीं बचोगी। गांव के डाक्टर से इलाज करवाई सहरसा 3 डॉक्टरों से इलाज करवाई। अन्त पटना में स्थित इंदिरा गांधी आर्युविज्ञान संस्थान में भी अपना इलाज करवाई लेकिन स्वास्थ्य ठीक नहीं हुआ।

इनके आवास में स्थित चापाकल में आइरन मानक मात्रा से अधिक है। मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्ता उन्हें आयरन मुक्त पानी पीने के लिए मटका फिल्टर से प्राप्त छनित का पानी पीने के लिए बताई। उन्होंने कार्यकर्ता से मटका फिल्टर लगाने के लिए कहीं। कार्यकर्ता कुम्भकार से सम्पर्क कर उनहें मटका फिल्टर महिसरहो पुनीता देवी पति रधुनंदन चौधरी के यहां कहा।

अगले दिन कुम्भकार वहां मटका फिल्टर लेकर पहुंचे साथ में कार्यकर्त्ता भी थे। कार्यकर्ता के द्वारा मटका फिल्टर लगाया गया। वह मटका फिल्टर का पानी पीना आरंभ कर दिया। कुछ दिन मटका का पानी पिया। बरसात का मौसम आ गया। पुनीता देवी के घर के बगल में 2010 में मेघ पाईन अभियान के तरफ से सड़क के किनारे वर्षा जल संग्रहण स्टॉल लगाया गया। साथ ही वर्षा जल भंडारण के लिए जलकोठी भी दिया गया।

मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ता के द्वारा पुनीता देवी को मटका फिल्टर के पानी के बदले वर्षा जल पीने की सलाह दिया। कार्यकर्त्ता ने बताया कि वर्षा का पानी मटका फिल्टर के पानी से अधिक शुद्ध होता है। वह जुलाई, अगस्त एवं सितम्बर 2010 से लगातार वर्षा जल ही पीती है खाना भी वर्षाजल में ही बनाती हैं वह बिल्कुल स्वस्थ है अपनी फायदा सम्बंधी बात दूसरे को भी बताती है। उसने ममता नामकी लड़की जो बीमार रहती थी अनियमित शोच जाती थी उसे भी वर्षाजल पीने की सलाह दिया लगातार वर्षा जल के सेवन से ममता अब ठीक हो गई। इन्ही का एक लड़का रंधीर है जो अपनी मां से कहता है कि वर्षा का पानी पीने से भूख अधिक लगता है।

मटका फिल्टर या स्थायी फिल्टर को महिलाएं शुभ मानती है पहले भी घड़ा में पानी लोग रखते थे अभी अभियान के द्वारा जो राशि लेकर फिल्टर या मटका फिल्टर आपूर्ति होती है उसमें महिलाएं सिन्दरु तथा पिठार लगाती हैं यह शुभ का प्रतीक चिन्ह है।

अभियान ने यहां ऐसा जादू छोड़ा है कि बाहर बाहर से लोग यहां पानी लेने आते है। जब पूनिता जी कोठी से पानी लाने जाती है तो आसपास के लोग कहते है कि दवा लेने आ गई मेघ पाईन अभियान ने हमें एक शोध एवं चिकित्सक दोनों दिया है। हम आजन्म इसके ऋणी रहूंगी। इस आसपास में स्थाई फिल्टर एवं मटका फिल्टर लगाने की हवा वह गई हैं मटका फिल्टर की आपूर्ति नहीं हो पाती है। क्योंकि एक ही कुम्भकार बनाते हैं तथा बरसात का मौसम है। मटका फिल्टर का उत्पादन जारी है। स्थाई फिल्टर उपलब्ध है। स्थाई फिल्टर के लिए लोगों को प्रेरित किया जा रहा है।

वर्षा जल सभी रोगों की दवा है। इसी सोच के तहत वर्षा जल संग्रहण हेतु अस्थाई तथा स्थाई जल कोठी का निर्माण किया जा रहा है। अब लोग अधिक मात्रा में वर्षा जल का संग्रहण कर सकेंगे। अब लोग वर्षा जल का दवा के रूप में उपयोग करते है।